कथा सरिता

राष्ट्रहित में सिद्ध मंत्र

राणा प्रताप के अतिरिक्त राजस्थान में रघुपति सिंह ही एकमात्र ऐसा सेनानी था जो अकबर के सामने घुटने टेकने के लिए तैयार नहीं था। अपने परिवार से दूर वह राणा प्रताप की सहयता करता रहता था। उसके घर पर पहरा बिठा दिया गया, लेकिन वह घर आता ही नहीं था। उसके गुप्तचर ही उसे घर का समाचार दे दिया करते। एक बार उसका पुत्र बहुत ज़्यादा बीमार हो गया। पुत्र की बीमारी जब अधिक बढ़ गई तो उसने घर जाने का निश्चय किया। एक शाम वह अपने घर पहुंचा तो पहरे पर खड़े सिपाही ने उसे पकड़ लिया। तब रघुपति सिंह ने कहा - देखो, मेरा बेटा बहुत बीमार है। मुझे एक बार उससे मिलने दो। फिर मैं स्वयं को तुम्हारे हवाले कर दूंगा। सिपाही को दया आ गई। उसने रघुपति सिंह को अंदर जाने दिया। बाहर सेनापति को रघुपति सिंह के घर आने की बात पता चल गई। उसने आकर पहरे पर तैनात सिपाही से पूछा, तो सिपाही ने सच-सच बता दिया। तब सेनापति ने रघुपति सिंह के साथ उस सिपाही को भी कैद कर लिया। रघुपति सिंह ने सेनापति से सिपाही को छोड़ देने का आग्रह किया, किंतु वह नहीं माना और दोनों को अकबर के समक्ष पेश कर दिया। अकबर सिपाही से बोला - तेरे मन में दया आ गई, मतलब तू खुदा का बंदा पहले है और बादशाह का सिपाही बाद में। मैं खुश हुआ। जा अपना काम कर। फिर वह रघुपति सिंह से बोला - मैं तुम्हारी बहादुरी व इंसानियत का कायल हो गया। यह कहकर उसने उसे भी मुक्त कर दिया।

वस्तुत: तीन बातें मानव व राष्ट्रहित में सिद्ध मंत्र हैं - अच्छाई की शक्ति का प्रचार करना, शंका से रहित होना तथा अच्छे लोगों की मदद करना।

डर नहीं, निर्भयता से...

ईरान के सुल्तान एक बार किसी कारणवश ईरान के एक कबीले कबूदजामा के सरदार नसरूद्दीन से नाराज हो गए। उन्होंने अपने एक अन्य सरदार को हुक्म दिया कि जाओ और उसका सिर काटकर ले आओ। अपने एक सम्बन्धी से नसरूद्दीन को यह समाचार मालूम हुआ। उसके रिश्तेदारों ने उसे तुरंत भाग जाने के लिए कहा तो वह बोला - अगर मेरी मौत मेरे पास आ रही है तो यहां से जाने के बाद वह वहां भी मेरा पीछा करेगी, इसलिए मेरे यहां से भाग जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। सरदार नसरूद्दीन के यहां पहुंचा और उसने सुल्तान का हुक्म सुनाया तो नसरूद्दीन ने हंसते हुए कहा - मेरा सिर हाज़िर है, लेकिन उसे यहां से काटकर दरबार तक ले जाने में परेशानी होगी। बेहतर होगा कि मैं आपके साथ दरबार तक चलूं, वहां सुल्तान के सामने आप मेरा सिर काट देना। सरदार राज़ी हो गया। जब दोनों दरबार पहुंचे तो सुल्तान नसरूद्दीन को जीवित देखकर बेहद नाराज़ हुआ। हुक्म की तामील न करने के कारण उसने अपने सरदार को भी मौत की सज़ा सुना दी। तब नसरूद्दीन ने एक रूबाई में कहा - मैं अपनी बुद्धि के नेत्रों में तेरे द्वार के रजकणों को भरे हुए अकेला नहीं बल्कि सैकड़ों प्रार्थनाओं के साथ आया हूँ। तुमने मेरा सिर मांगा था तो मैं यह सिर दूसरे किसी को क्यों देता? इसीलिए मैं अपना सिर अपनी गर्दन पर डालकर तुम्हारे लिए ला रहा हूँ। नसरूद्दीन का यह निर्भय उत्तर सुनकर सुल्तान खुश हो गया और दोनों को छोड़ दिया।

कथा संदेश देती है कि विकट परिस्थिति में भी निर्भयता से कार्य करना चाहिए। निर्भयता हमें ऐसी परिस्थिति से पार पाने का बल प्रदान करती है।

सदाचार से सम्मान

एक राजा विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। एक पंडित के मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि कोई पंडित अपनी विद्वता के कारण सम्मान पाता है या आचरण के कारण। उसने इसकी परीक्षा करने की ठानी। उसने मंत्री की उपस्थिति में राजकोष से एक सिक्का उठाया और जेब में रख लिया। दूसरे दिन फिर उसने दो सिक्के उठाए तथा अपनी जेब में रख लिए। मंत्री ने देखा, तो सोचा कि यदि यह रोज़ सिक्के उठाता रहा, तो एक दिन चोरी का आरोप उसी पर लगेगा। उसने राजा से कहा, आप जिन्हें महान विद्वान बताकर सम्मान देते हैं, उन पंडित जी ने दो बार सिक्कों की चोरी की है। राजा ने उसी समय पंडित को जेल की सज़ा सुना दी।

तब फिर पंडित बोला, महाराज, मैंने सिक्कों के लोभ में चोरी नहीं की। मैं यह देखना चाहता था कि विद्वान की पूजा उसके ज्ञान के कारण होती है या आचरण के कारण। इसी का उत्तर पाने के लिए मैंने सिक्कों की चोरी का नाटक किया। मुझे पता लग गया है कि सच्चा सम्मान पाने के लिए ज्ञानी के साथ-साथ सदाचारी होना भी आवश्यक है। ज्ञानी यदि सदाचारी नहीं है तो वह सम्मान का हकदार नहीं हो सकता। राजा बोले, पंडित जी, आप ठीक कहते हैं। सदाचार सर्वोपरि गुण है। सदाचार हर क्षेत्र में सम्मान पाता है, जबकि बेईमान एक न एक दिन अपना सर्वनाश कर लेता है।

पुणे-पिंपरी। चिंचवड महानगरपालिका के वर्धापन दिवस पर कॉर्पोरेशन की ओर से पिंपरी में 24 वर्ष से ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र की नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए ब्र.कु. सुरेखा को समाज रत्न पुरस्कार प्रदान करते हुए पूर्व उप मुख्यमंत्री अजित दादा पवार। साथ हैं महापौर सौ. शकुंतला धराड़े, उपमहापौर प्रभाकर वाघेरे, सुप्रसिद्ध खिलाड़ी अंजलि भागवत, चेयरमैन हीरानंद आसवानी, संजोग वाघेरे तथा अन्य।

मालेगांव-महा.। चैतन्य नवदुर्गा देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर देवियों की आरती करते हुए विधायक दादा भूसे, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. सुलभा तथा अन्य गणमान्य जन।

केसनंद-चंदन नगर(महा.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् संजय गांधी निराधार के अध्यक्ष रामदास हरगुडे को ओमशांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. उज्वल व ब्र.कु. जयश्री।

भोपाल-म.प्र.। विट्ठल मार्केट ग्राउण्ड में भोपाल रन,एन.जी.ओ. तथा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित हेल्थ एक्ज़ीविशन के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. प्रहलाद तथा अन्य।

रतलाम-म.प्र.। सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित 'यादगार दिवस' के कार्यक्रम के दौरान अतिथियों को सौगात देने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. गीता, ऑटोमोबाइल के मालिक मुस्तफा पकवाला, लायन्स क्लब के अध्यक्ष संजय गुणावत तथा अन्य अतिथिगण।

वर्धा-महा.। महिला कारागृह में साप्ताहिक राजयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित हैं जेल अधीक्षक बावीस्कर जी, जेलर सहांमित्रा शेकळे, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।